

सपादक
प्रकाश पण्डित

प्रथम संस्करण
फर्वरी, १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

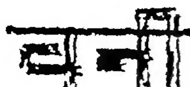
प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफरिन पुल, दिल्ली





मताअ़-ए-लौहो-क़लम छिन गई तो क्या ग़म है ?
कि ख़ूने-दिल में डबो ली हैं उंगलियां मैंने ॥





पाकिस्तान टाइम्ज़, लाहौर
११-१०-५७

बरादरम प्रकाश पण्डित,

तस्लीम।

आपके दो खत मिले। भई, मुझे अपने हालाते-जिन्दगी मे कतई दिलचस्पी नहीं है, न मै चाहता हूं कि आप उन पर अपने पढने वालो का वक्त ज़ाया करें। इन्तिखाब (कविताओं के चयन) और उसकी इशाअत (प्रकाशन) की आपको इजाजत है। अपने बारे मे मुख्तसर मालूमात लिखे देता हूं। पैदाइश सियालकोट १६११। तालीम स्काच मिशन हाई स्कूल सियालकोट, गवर्नमेंट कालेज लाहौर (एम० ए० अंग्रेजी १६३३, एम० ए० अरबी १६३४)। मुलाज़मत एम० ए० ओ० कालेज अमृतसर १६३४ से १६४० तक। हेली कालेज लाहौर १६४० से १६४२ तक। फ़ौज मे (कर्नल की हैसियत से) १६४२ से १६४७ तक। इसके बाद 'पाकिस्तान टाइम्ज़' और 'इमरोज़' की एडीटरी ताहाल (अब तक)। मार्च १६५१ से अप्रैल १६५५ तक जेलखाना (रावलपिंडी कान्सपिरेसी केस के

सिलसिले में) । किताबें 'नक्शे-फर्यादी,' 'दस्ते-सबा' और 'जिन्दा-नामा' ।

आपका
'फैज'

'फैज़' के इस पत्र के बाद फैज़ के व्यक्तिगत जीवन के बारे मे कुछ लिखना, लिखना न होकर गढना होगा—जिसे ज़ाहिर है न मैं पसद करता हू, न 'फैज़,' और न ही आप पसद करेंगे । अतएव 'फैज' के जीवन की बजाय मैं सीधे 'फैज़' की शायरी की ओर आता हू जिसके पीछे वर्षों बल्कि सदियो की साहित्यिक पूंजी है, बल्कि मै तो यह कहूगा कि स्वय साहित्य और समाज दोनो मिलकर वर्षों तपस्या करते है, तब जाकर ऐसी मन्त्र-मुग्ध कर देने वाली शायरी जन्म लेती है ।

"शेर लिखना जुर्म न सही लेकिन बेवजह शेर लिखते रहना ऐसी अक्लमन्दी भी नही है ।" 'फैज' के पहले कविता-सग्रह 'नक्शे-फर्यादी' की भूमिका मे इस वाक्य को पढते हुए मुझे 'गालिब' का वह वाक्य याद आ गया जिसमे उर्दू के सब से बडे शायर ने कहा था कि जब से मेरे सीने (छाती) का नासूर बद हो गया है, मैने शेर कहना छोड दिया है ।

सीने का नासूर चाहे इश्क या प्रेम की भावना हो, चाहे स्वतनता, देश एव मानव-प्रेम की भावना, कविता ही के लिए नही समस्त ललित कलाओं के लिये अनिवार्य है । अध्ययन और अभ्यास से हमे बात कहने का सलीका तो आ सकता है लेकिन

अपनी वात को वजनी वनाने और दूसरे के मन मे विठाने के लिए स्वय हमे अपने मन मे उतरना पड़ता है। विश्व-साहित्य में ऐसी वहुत-सी मिसाले मिलती है कि किसी कवि अथवा लेखक ने वहुत अच्छी कवितायें, एक वहुत अच्छा उपन्यास या दस-पन्द्रह वहुत अच्छी कहानिया लिखने के वाद लिखने से हाथ खीच लिया और फिर समालोचको या पाठकों के तकाज़ो से जब उसने पुनः कलम उठाया तो वह वात पैदा न हो सकी जो उसके 'कच्चेपन' के जमाने मे हुई थी। कदाचित इसी वात को लेकर 'नक़्शे-फर्यादी' की भूमिका मे 'फैज' ने अपनी दो-चार नजमो को क़ाविले-वर्दाश्त करार देते हुए लिखा था कि "आज से कुछ वरस पहले एक मुऐयन जज्वे (निश्चित भावना) के ज़ेर-असर अशआर (शेर) खुद-वखुद वारिद (आगत) होते थे, लेकिन अव मज़ामीन (विषय) के लिए तजस्सुस (तलाश) करना पड़ता है···· 'हम मे से वेशतर की शायरी किसी दाखली या खारिजी मुहर्रक (अंतरग या वाह्य प्रेरक) की दस्ते-निगर (आभारी) होती है और अगर इन मुहर्रिकात की शिद्दत (उग्रता) मे कमी आ जाये या उनके इजहार (अभिव्यक्ति) के लिये कोई सहल रास्ता पेशे-नजर न हो तो या तो तजुर्वात को मस्ख (रूपातरित) करना पड़ता है या तरीके-इज़हार को। ऐसी सूरते-हालात पैदा होने से पहले ही जौक और मसलहत का तकाजा यही है कि शायर को जो कुछ कहना हो कह ले, अहले-महफिल का शुक्रिया अदा करे और इजाजत चाहे।"

'फैज़' के अतरग या वाह्य प्रेरको में सब से बडा प्रेरक 'हुस्नो-इश्क' है बल्कि उसने तो यहा तक कह दिया था कि –

... .

लेकिन उस शोख के आहिस्ता से खुलते हुए होट
हाए उस जिस्म के कम्बख्त दिलावेज़ खुतूत[1]
आप ही कहिये कही ऐसे भी अफसूँ[2] होगे
अपना मौज़ूए-सुखन[3] इन के सिवा और नही
तबए-शायर का[4] वतन इन के सिवा और नही

(मौज़ूए-सुखन)

किन्तु इस वद के शुरू के 'लेकिन' से पहले उसने जिन चीजो को अपना मौज़ूए-सुखन वनाना पसद नही किया था और :

इन दमकते हुए शहरो की फरावा मखलूक[5] ,
क्यो फकत मरने की हसरत मे जिया करती है ?
ये हसी खेत फटा पडता है जोवन जिन का,
किस लिए इन मे फकत भूख उगा करती है ?

ऐसे प्रश्न हल किये विना छोड दिये थे, वही 'साधारण' प्रश्न वाद मे उसकी अतरग और वाह्य प्रेरणाओ का साधन बने और यही वे प्रश्न थे जिन्होने उसे अहले-महफिल का शुक्रिया अदा करके उठ आने से रोका और उर्दू साहित्य को एक वडा शायर प्रदान किया ।

फैज़ अहमद 'फैज़' आधुनिक काल के उन चद वडे शायरो

---

१ हृदयाकर्षक रेखाये (वनावट) २ जादू ३. काव्य-विषय ४. शायर की प्रकृति ५ विशाल जनता

में से हैं जिन्होने काव्य-कला मे नये प्रयोग तो किये लेकिन उन की बुनियाद पुराने प्रयोगो पर रक्खी और इस आधार-भूत तथ्य को कभी नही भुलाया कि हर नई चीज़ पुरानी कोख से जन्म लेती है। यही कारण है कि उसकी शायरी का अध्ययन करते समय हमे किसी प्रकार की अजनबियत महसूस नही होती। पेचीदा और अस्पष्ट उपमाओ से वह हमे उलझन मे नही डालता बल्कि अपने कोमल स्वर मे वह हम से सरगोशियां करता है और उसकी सरगोशी इतनी अर्थपूर्ण होती है कि कुछ शब्द कान मे पड़ते ही मनोभाव उभर आते हैं। ज़रा 'नक्शे-फर्यादी' का पहला पन्ना उलटिये:—

रात यूं दिल में तेरी खोई हुई याद आई,
जैसे वीराने मे चुपके से बहार आजाये,
जैसे सहराओ मे[1] होले से चले बादे-नसीम[2],
जैसे बीमार को बेवजह करार आजाये।

प्रेयसी को याद कोई नया काव्य-विषय नही है लेकिन इन सुन्दर उपमाओं और अपनी विशेष वर्णन-शैली से उसने इसे बिल्कुल नया बल्कि अछूता बना दिया है। इस एक कित्आ ही की नही यह उसकी समूची शायरी की विशेषता है कि यह नयी भी है और पुरानी भी। वर्तमान की उपज है लेकिन अतीत की उत्तराधिकारी है। नये विषय पुरानी शैली में और पुराने विषय नये ढग से प्रस्तुत करने का जो कौशल 'फ़ैज़' को प्राप्त है, आधुनिक काल के बहुत कम शायर उसकी गर्द

---

१. मरुस्थलो २. मृदु समीर

को पहुँचते हैं। ज़रा 'गालिब' का यह शेर देखिये

दिया है दिल अगर उसको बशर है क्या कहिये।
हुआ रक़ीब तो हो, नामाबर[1] है क्या कहिये॥

और अब इसी विषय को 'फैज़' की नज़्म' 'रकीब से' के दो शेरो मे देखिये —

तूने देखी है वो पेशानी[2], वो रुख्सार[3], वो होट,
ज़िन्दगी जिनके तसव्वुर मे[4] लुटा दी हमने।
हमने इस इश्क मे क्या खोया है क्या पाया है,
जुज तेरे[5] और को समझाऊ तो समझा न सकू ।

महबूब, आशिक, रकीब और इश्क के मुआमलो तक ही सीमित नही, फैज़' ने हर जगह नई और पुरानी बातो और नई और पुरानी शैली का बडा सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। 'गालिब' का एक और शेर है

लिखते रहे जुनू की[6] हिकायाते-खूंचका[7]।
हरचद इसमे हाथ हमारे कलम हुए[8]॥

और 'फैज़' का शेर है

हम परवरिशे - लौहो - कलम[9] करते रहेगे।
जो दिल पे गुज़रती है रकम करते रहेगे[10]॥

इन उदाहरणो से मेरा उद्देश्य 'फैज़' और गालिब की शायरी के समन्वित मूल्य दर्शाना नही है और मेरा अभिप्राय यह भी

१ पत्र-वाहक २ माथा ३ कपोल ४ कल्पना मे ५ तेरे सिवाय ६ इश्क अथवा उन्माद की ७ रक्तिम कथा ८ कट गये ९ तलवार और क़लम का पालन १० लिखते रहेगे

नही है कि हमे अतीत की समस्त परम्पराओं को ज्यो का त्यों अपना लेना चाहिये। कुछ परम्पराए, चाहे वे साहित्य की हो, संस्कृति की हो, या अन्य सामाजिक खडो की, अपनी ऐतिहासिक कार्यपूर्ति के वाद अपनी मौत आप मर जाती है। उन्हे नये सिरे से जिलाने का मतलव गड़े मुर्दे उखाड़ना और ऐतिहासिक विकास से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना है। लेकिन इससे भी खतरनाक वात यह है कि नयेपन के उन्माद मे पुरानी चीजो को केवल इसलिये घृणा के योग्य मान लिया जाये कि वे पुरानी हैं। धरती, आकाश, चाद, सितारे, सूरज, समुद्र और पहाड़ सव पुराने हैं लेकिन हमें ये चीजें पसद है; और इसलिये पसंद है कि हम प्रतिक्षण उन्हे वदलते रहते है—यानी इनके सम्बन्ध मे हमारा दृष्टिकोण वदलता रहता है। हम इनके वारे मे नई वातें मालूम कर लेते है और इस तरह ये समस्त पुरानी चीजें सदैव नई वनी रहती हैं।

यह एक वड़ी विचित्र लेकिन प्रशसनीय वास्तविकता है कि प्राचीन और नवीन शायरो की महफिल में खप कर भी 'फैज' की अपनी एक अलग हैसियत है। उसने काव्य-कला के नियमो मे कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नही किया, और न कभी अपनी अद्वितीयता प्रकट करने के लिये 'मीरा जी' (उर्दू के एक प्रयोगवादी शायर) की तरह यह कहा है कि "अकसरियत (बहुतनो) की नज्में अलग हैं और मेरी नज्मे अलग; और चूंकि दुनिया की हर वात हर शख्स के लिये नही होती इसलिये मेरी नज्मे भी सिर्फ उनके लिये हैं जो उन्हे समझने

के ग्रहल हो।" (यह ग्रद्वितीयता शायर की है, शायरी की नही) फिर भी उसके किसी शेर पर उसका नाम पढे बिना हम बता सकते हैं कि यह 'फैज़' का शेर है। 'फैज़' की शायरी की 'ग्रद्वितीयता' ग्राधारित है उसकी शैली के लोच ग्रौर मदगति पर, कोमल, मृदुल ग्रौर सौ-सौ जादू जगाने वाले शब्दो के चयन पर, तरसी हुई नाकाम निगाहे ग्रौर ग्रावाज़ मे सोई हुई शीरीनियाँ ऐसी ग्रलकृत परिभाषाग्रो ग्रौर रूपको पर, ग्रौर इन समस्त विशेषताग्रो के साथ गूढ से गूढ बात कहने के सलीके पर। उर्दू के एक बुज़ुर्ग शायर 'ग्रसर' लखनवी ने शायद बिल्कुल ठीक लिखा है कि " 'फैज़' की शायरी तरक्की के मदारिज (दर्जे) तै करके ग्रब इस नुक्ता-ए-उरूज (शिखर बिन्दु) पर पहुँच गई है जिस तक शायद ही किसी दूसरे तरक्की-पसद (प्रगतिशील) शायर की रसाई हुई हो। तखय्युल (कल्पना) ने सनाग्रत (शिल्पकला) के जौहर दिखाये हैं ग्रौर मासूम जज्बात को हसीन पैकर (शरीर) बख्शा है। ऐसा मालूम होता है कि परियो का एक गोल (झुण्ड) एक तलिस्मी फिज़ा (जादूई वातावरण) मे इस तरह मस्ते-परवाज़ (उडने मे मस्त) है कि एक पर एक की छूत पड़ रही है ग्रौर कौसे-कज़ह (इन्द्रधनुष) के ग्रक्कास (प्रतिरूपक) बादलो से सबरगी बारिश हो रही है ।"

ग्रपनी शायरी की तरह ग्रपने व्यक्तिगत जीवन में भी उसे किसी ने ऊचा बोलते नही सुना। बातचीत के ग्रतिरिक्त मुशायरो मे भी वह इस तरह ग्रपने शेर पढता है जैसे उसके

होंटो से यदि एक जरा ऊँची आवाज़ निकल गई तो न जाने कितने मोती चकनाचूर हो जायेंगे। वह सेना में कर्नल रहा, जहाँ किसी नर्मदिल व्यक्ति की गुंजाइश नहीं होती। उसने कालेज की प्रोफेसरी की, जहां कालेज के लड़के प्रोफेसर तो प्रोफेसर शैतान तक को अपना स्वभाव बदलने पर विवश कर दे। उसने रेडियो मे नौकरी की, जहा अपने मातहतों को न डाटने की दलील अफसर की नालायकी समझी जाती है। उसने पत्रकारिता-जैसा जान-जोखम का पेशा भी अपनाया और फिर जब पाकिस्तान सरकार ने इस देवता-स्वरूप व्यक्ति पर हिंसात्मक विद्रोह का आरोप लगाकर जेल में डाल दिया तब भी मेजर मोहम्मद इसहाक (फैज़ के जेल के साथी) के कथनानुसार "कही पास-पडोस मे तू-तू मैं-मैं हो, दोस्तो मे तल्ख़-कलामी हो, या यूं ही किसी ने त्योरी चढा रखी हो,'फैज़' की तबीयत जरूर ख़राब हो जाती थी और इसके साथ ही शायरी की कैफियत (मूड) भी काफूर हो जाती थी।" 'फैज़' ने अपने निर्दोष होने का तथा उच्चाधिकारियों के षड्यंत्रो का ज़िक्र किया भी तो इस भाषा मे :

फ़िक्रे - दिलदारिये - गुलज़ार[1] करूं या न करूं ?
ज़िक्रे - मुर्ग़ाने - गिरफ़्तार[2] करूं या न करूं ?
क़िस्सा - ए - साज़िशे-अग़ियार[3] कहूं या न कहूं ?
शिकवा - ए - यारे-तरहदार[4] करूं या न करूं ?

१. वाटिका-रूपी देश की दिलदारी की चिन्ता २. कैदी पक्षियों की चर्चा ३. शत्रुओं के षड्यन्त्र की कहानी ४. रंगीन यार की शिकायत

जाने क्या वज़अ[1] है अब रस्मे-वफा[2] की ऐ दिल।
वज़अ-ए-देरीना पे[3] इसरार[4] करू या न करू ?

'फ़ैज़' के स्वर की यह नर्मी और गभीरता उसके प्राचीन साहित्य के विस्तृत अध्ययन और मौलिक रूप से रोमाटिक या स्वच्छन्दता-वादी शायर होने की देन है। लेकिन उसकी स्वच्छन्दता चू कि भौतिक ससार की स्वच्छन्दता है (प्रारभ की कुछ नज्मो को छोडकर) और शायर का कर्तव्य उसके मतानुसार यह है कि वह जीवन से अनुभव प्राप्त करे और उस पर अपनी छाप लगाकर उसे फिर से जीवन को लौटा दे, इसलिए उसने बहुत शीघ्र सुर्ख होटो पर तबस्सुम की ज़िया[5], मरमरी हाथो की लर्ज़िशो, मखमली बाहो और दमकते हुए रुखसारो[6] के सुनहले पर्दो के उस पार वास्तविकता की झलक देख ली*। आरज़ूओ के मकतल[7], भूख उगाने वाले खेत, खाक मे लिथडे और खून मे नहाये हुए जिस्म, बाज़ारो मे विकता हुआ मज़दूर का गोश्त और नातवानो[8] के निवालो पर झपटते हुए उक्काव[9] देख लिये और कहने को तो उसने अपनी प्रेयसी से कहा लेकिन वास्तव मे वह अपनी स्वच्छन्दता-

---

१ तरीक़ा २ प्रेम निभाने की परिपाटी ३ पुराने ढग पर ४ आग्रह ५ मुस्कान की ज्योति ६ कपोलो के ७ वध-स्थल ८ दुर्बलो ९ बाज-पक्षी

* मेरे विचार मे इसका एक कारण यह भी है कि प्रेम ने 'फ़ैज़' के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है और उसे अपने आप ही मे नही उलझाए रखा—सम्पादक

वादी शायरी से सम्बोधित हुआ :

अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे,
और भी दुख हैं जमाने मे मोहब्बत के सिवा,
राहते और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,
मुझसे पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न मांग !

और फिर स्वच्छन्दता से पूर्णतया मुक्त उसने राजनैतिक नज्मे भी लिखी और देश-प्रेम को ठीक उसी वेदना और व्यथा के साथ व्यक्त किया जैसा कि प्रेयसी के प्रेम को किया था।

मुम्ताज हुसैन (उर्दू के एक आलोचक) के कथनानुसार उसकी शायरी मे अगर एक परम्परा कैस (मजनूं) की है तो दूसरी मन्सूर[1] की। 'फैज़' ने इन दोनो परम्पराओ को अपनी शायरी मे कुछ इस प्रकार समो लिया है कि उसकी शायरी स्वय एक परम्परा बन गई है। वह जब भी महफिल में आया तो एक छोटी सी पुस्तक, एक कितआ, गजल के कुछ शेर, कुछ यूंही सा काव्य-अभिभास और कुछ क्षमा-याचना की बाते लेकर आया, लेकिन जब भी और जैसे भी आया खूब आया। दोस्त दुश्मनो ने सिर हिलाया, चर्चा हुई। कुछ लोगों ने यह कहकर पुस्तक पटक दी—इसमे रखा ही क्या है, लेकिन

१. एक प्रसिद्ध ईरानी वली जिनका विश्वास था कि आत्मा और परमात्मा एक ही है और उन्होंने 'अनल-हक़' (सोऽहम्—मैं ही परमात्मा हूँ) की आवाज़ उठाई थी। उस समय के मुसलमानों को उनका यह नारा अधार्मिक लगा और उन्होंने उन्हें फांसी दे दी।

फिर वही उस पुस्तक के शेरो को गुनगुनाने भी लगे[1]। कैसी आश्चर्यजनक वास्तविकता है कि केवल चद नज्मो और चद गज़लो का शायर होने पर भी 'फैज़' की शायरी एक बाकायदा 'स्कूल आफ थॉट' का दर्जा रखती है और नई पीढी का कोई उर्दू शायर अपनी छाती पर हाथ रखकर इस बात का दावा नही कर सकता कि वह किसी-न-किसी रूप मे 'फैज़' से प्रभावित नही हुआ। रूप और रस, प्रेम और राजनीति, कला और विचार का जैसा सराहनीय समन्वय फैज़ अहमद 'फैज़' ने प्रस्तुत किया है और प्राचीन परम्पराओ पर नवीन परम्पराओ का महल उसारा है, नि सदेह वह उसी का हिस्सा है और आधुनिक उर्दू शायरी उसके इस योग पर जितना गर्व कर सके कम है।

१ १९५२ मे जब 'फैज़' जेल मे था और उसकी दूसरी पुस्तक 'दस्ते-सबा' प्रकाशित हुई थी तो सय्यद सज्जाद ज़हीर (उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार, कम्युनिस्ट नेता और 'फैज़' के जेल के साथी) ने तो यहां तक कह दिया था कि 'बहुत अर्सा गुज़र जाने के बाद जब लोग रावलपिंडी साज़िश के मुकद्दमे को भूल जायेंगे और पाकिस्तान का मुवर्रिख (इतिहासकार) १९५२ के अहम वाकयात पर नज़र डालेगा तो ग़ालिबन इस साल का सबसे अहम तारीखी वाकया (ऐतिहासिक घटना) नज्मो की इन छोटी-सी किताब की इशाअत (प्रकाशन) को ही क़रार दिया जाएगा।

चयन



यह चयन 'फैज' की तीन पुस्तकों 'नक्शे-फर्यादी',
'दस्ते-सबा' और 'जिन्दां-नामा'
मे से किया गया है।

मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न मांग !

मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न माग !

मैंने समझा था कि तू है तो दरख्शा[1] है हयात[2] ,
तेरा गम है तो गमे-दहर का[3] झगडा क्या है ?
तेरी सूरत से है आलम मे[4] बहारो को सबात[5] ,
तेरी आंखो के सिवा दुनिया मे रक्खा क्या है ?

तू जो मिल जाये तो तकदीर निगूं हो जाये[6] ,
यूं न था, मैने फकत[7] चाहा था यूं हो जाये ।

और भी दुख हैं जमाने में मोहब्बत के सिवा,
राहतें[8] और भी हैं वस्ल की[9] राहत के सिवा,
अनगिनत सदियो के तारीक बहीमाना तलिस्म[10],
रेशमो-अतलसो-कमख्वाब के बुनवाये हुए,
जा-ब-जा बिकते हुए कूचा-ओ-बाजार मे जिस्म,
खाक में लिथडे हुए, खून मे नहलाये हुए ।

---

१. प्रकाशमान २. जीवन ३. सांसारिक चिंताओं का ४. संसार में ५. स्थायित्व ६ सिर झुका ले ७. केवल ८. आनन्द ९. मिलन की १०. अपकारपूर्ण पाशविक जादू

जिस्म निकले हुए अमराज़ के[1] तन्नूरो से,
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरो से।
लौट जाती है उधर को भी नज़र क्या कीजे ?
अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे ?
और भी दुख हैं ज़माने मे मोहब्बत के सिवा,
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,
मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न माग !

ख़ुदा वो वक़्त न लाये······

ख़ुदा वो वक़्त न लाये कि सोगवार[1] हो तू !

सुकूं की[2] नींद तुझे भी हराम हो जाये,
तेरी मसर्रते-पैहम[3] तमाम हो जाये,
तेरी हयात[4] तुझे तल्ख-जाम[5] हो जाये,
ग़मों से आईना-ए-दिल[6] गुदाज़[7] हो तेरा !

हुजूमे-यास से[8] बेताब होके रह जाये,
वुफूरे-दर्द से[9] सीमाब[10] होके रह जाये,
तेरा शबाब[11] फ़कत[12] ख्वाब होके रह जाये,
ग़रूरे-हुस्न[13] सरापा नियाज़[14] हो तेरा !

तवील[15] रातों में तू भी करार को[16] तरसे,
तेरी निगाह किसी ग़म-गुसार को[17] तरसे,
ख़िज़ां-रसीदा तमन्ना[18] बहार को तरसे,
कोई जबीं[19] न तेरे संगे-आस्ता पे[20] झुके !

---

१ उदास, मलिन-मन २. शान्ति की ३. स्थायी प्रसन्नता ४ जीवन ५ कड़वा प्याला ६ हृदय-रूपी दर्पण ७. पिघलने वाला ८. निराशाओं की बहुलता से ९ पीड़ाओं की बहुलता से १०. पारा ११. यौवन १२. केवल १३. सौन्दर्य का घमंड १४ सिर से पैर तक विनय की मूर्ति १५. लम्बी १६ चैन को १७ सहानुभूति करने वाले को १८. मुर्झाई हुई (विफल) कामना १९ माथा २० दहलीज़ के पत्थर पर

जिस्म निकले हुए अमराज़ के तन्नूरो से,
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरो से।
लौट जाती है उधर को भी नज़र क्या कीजे ?
अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे ?
और भी दुख हैं ज़माने मे मोहब्बत के सिवा,
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,
मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न माग !

ख़ुदा वो वक़्त न लाये……

ख़ुदा वो वक़्त न लाये कि सोगवार[1] हो तू !

सुकूं की[2] नींद तुझे भी हराम हो जाये,
तेरी मसर्रते-पैहम[3] तमाम हो जाये,
तेरी हयात[4] तुझे तल्ख़-जाम[5] हो जाये,
ग़मों से आईना-ए-दिल[6] गुदाज़[7] हो तेरा !

हुजूमे-यास से[8] बेताब होके रह जाये,
वुफ़ूरे-दर्द से[9] सीमाब[10] होके रह जाये,
तेरा शबाब[11] फ़कत[12] ख़्वाब होके रह जाये,
ग़रूरे-हुस्न[13] सरापा नियाज़[14] हो तेरा !

तवील[15] रातों में तू भी क़रार को[16] तरसे,
तेरी निगाह किसी ग़म-गुसार को[17] तरसे,
ख़िज़ां-रसीदा तमन्ना[18] बहार को तरसे,
कोई जबीं[19] न तेरे संगे-आस्ताँ पे[20] झुके !

---

१. उदास, मलिन-मन २. शान्ति की ३. स्थायी प्रसन्नता ४. जीवन ५ कड़वा प्याला ६. हृदय-रूपी दर्पण ७. पिघलने वाला ८. निराशाओं की बहुलता से ९. पीड़ाओं की बहुलता से १०. पारा ११. यौवन १२. केवल १३. सौन्दर्य का घमंड १४ सिर से पैर तक विनय की मूर्ति १५. लम्बी १६. चैन को १७. सहानुभूति करने वाले को १८. मुर्झाई हुई (विफल) कामना १९ माथा २० दहलीज़ के पत्थर पर

कि जिन्से-अज्ज़ो-अक़ीदत से[1] तुझको शाद[2] करे,
फ़रेबे-वादा-ए-फ़र्दा पे[3] एतमाद[4] करे,
खुदा वो वक्त न लाये कि तुझ को याद आये !

वो दिल कि तेरे लिये बेक़रार अब भी है।
वो आंख जिसको तेरा इन्तज़ार अब भी है॥

१ विनय और श्रद्धा से २ प्रसन्न ३ कल के वादे के फ़रेब पर ४ विश्वास

मेरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको !

मेरी जा अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको !

अभी तक दिल मे तेरे इश्क की कदील[1] रोशन[2] है,
तेरे जलवो से बज़्मे-ज़िन्दगी[3] जन्नत-ब-दामन[4] है।

मेरी रूह अब भी तनहाई मे तुझको याद करती है,
हर इक तारे-नफस मे[5] आरज़ू बेदार[6] है अब भी।
हर इक बेरंग साअत[7] मुन्तज़िर है तेरी आमद की[8],
निगाहे बिछ रही है रास्ता जरकार[9] है अब भी।

मगर जाने-हज़ी[10] सदमे सहेगी आखरिश[11] कब तक ?
तेरी बेमेहरियों पे[12] जान देगी आखरिश कब तक ?

तेरी आवाज़ में सोई हुई शीरीनियां[13] आखिर,
मेरे दिल की फसुर्दा[14] खलवतो मे[15] जा न पायेगी।
ये अश्को की फरावानी से[16] धुंदलाई हुई आखें,
तेरी रअनाइयों की[17] तमकनत को[18] भूल जायेंगी।

---

१. मशाल २. प्रकाशमान ३. जीवन की सभा ४ स्वर्ग समान ५ ध्यान ६. जागी हुई ७ क्षण ८. आगमन की ९ सुनहला १० दुखी प्राण ११. आखिर १२. निष्ठुरताओं पर १३. मिठासें १४. उदास १५ एकान्त में १६. बहुलता से १७ सुन्दरता की १८. मान को

पुकारेंगे तुझे तो लब कोई लज्जत[1] न पायेंगे,
गुलू में[2] तेरी उल्फत के तराने सूख जायेंगे।

मुबादा[3] यादहाये अहदे-माज़ी[4] महव[5] हो जायें,
ये पारीना फसाने[6] मौजहाये गम मे[7] खो जायें।
मेरे दिल की तहो से तेरी सूरत धुल के बह जाये,
हरीमे-इश्क की शमये-दरख्शां बुझ के रह जाये।

मुबादा अजनबी दुनिया की जुल्मत[8] घेर ले तुझ को।
मेरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझ को॥

---

१ आनन्द २ कंठ मे ३ भगवान न करे कि ऐसा हो ४. पुरानी यादें ५ विस्मृत ६ पुरानी (प्रेम) कहानियां ७. ग़म की लहरो मे ८. अंधकार

सोच

क्यों मेरा दिल शाद[1] नहीं है, क्यो ख़ामोश रहा करता हूँ ?
छोड़ो मेरी राम कहानी, मैं जैसा भी हूँ अच्छा हूँ ॥

मेरा दिल गमगीन है तो क्या, गमगी ये दुनिया है सारी।
ये दुख तेरा है न मेरा, हम सब की जागीर है प्यारी ॥

तू गर मेरी भी हो जाये, दुनिया के गम यूँही रहेंगे।
पाप के फंदे, जुल्म के बंधन, अपने कहे से कट न सकेंगे ॥

गम हर हालत मे मोहलक[2] है, अपना हो या और किसी का।
रोना-धोना, जी को जलाना, यू भी हमारा यू भी हमारा ॥

क्यो न जहां का ग़म अपना लें, बाद में सब तदबीरें सोचें।
बाद मे सुख के सपने देखें, सपनो की ताबीरें[3] सोचें ॥

बेफिक्रे धन-दौलत वाले, ये आखिर क्यो खुश रहते हैं ?
इन का सुख आपस मे बांटें, ये भी आखिर हम जैसे हैं ॥

हम ने माना जंग कड़ी है, सर फूटेंगे खून बहेगा।
खून मे गम भी बह जायेंगे, हम न रहें, ग़म भी न रहेगा ॥

---

१. खुश २ घातक ३. स्वप्न-फल

कुत्त

ये गलियो के आवारा बेकार कुत्ते,
कि बख़्शा गया जिनको ज़ौके-गदाई[1]।
ज़माने की फटकार सरमाया[2] इनका,
जहा-भर की दुतकार इनकी कमाई।
न आराम शब को न राहत सवेरे,
ग़लाज़त मे[3] घर नालियो में बसेरे।
जो बिगडें तो इक दूसरे से लडा दो,
ज़रा एक रोटी का टुकडा दिखा दो।
ये हर एक की ठोकरें खाने वाले,
ये फाको से उकता के मर जाने वाले।
ये मज़लूम मखलूक[4] गर सर उठाये,
तो इन्सान सब सरकशी[5] भूल जाये।
ये चाहे तो दुनिया को अपना बनालें,
ये आकाओ की हड्डिया तक चबालें।
कोई इनको एहसासे-ज़िल्लत[6] दिला दे,
कोई इनकी सोई हुई दुम हिला दे।

---

१ भीख मागने की अभिरुचि २ निधि ३ गदगी मे ४ सृष्टि
५ अवज्ञा ६ अपमान की चेतना

तनहाई

फिर कोई आया दिले-ज़ार[1] ! नही, कोई नही !
राहरो[2] होगा, कही और चला जायेगा।
ढल चुकी रात बिखरने लगा तारो का गुबार,
लड़खड़ाने लगे एवानो मे[3] ख़्वाबीदा[4] चिराग,
सो गई रास्ता तक-तक के हर इक राहगुज़ार[5] ,
अजनबी खाक ने धुदला दिये कदमों के सुराग[6] ,
गुल करो[7] शम्मे, बढ़ा दो मै-ओ-मीना-ओ-अयाग[8] ,
अपने बेख़्वाब[9] किवाड़ों को मुकफ्फल कर लो[10]
अब यहा कोई नही, कोई नही आयेगा।

---

१. दुखी मन २. राही ३ महलों मे ४ सोये हुए ५. मार्ग ६. चिह्न ७ बुझा दो ८ सुराही, प्याले और शराब उठा दो। ९. जिनकी आँखों में नींद नहीं, अर्थात् घुने हुए १०. ताले लगा लो

बोल······

बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे,
बोल, ज़बा अब तक तेरी है।
तेरा सुतवा[1] जिस्म है तेरा,
बोल कि जा अब तक तेरी है।

देख कि आहगर की[2] दुका मे,
तुन्द[3] हैं शोले, सुर्ख़ है आहन[4]।
खुलने लगे कुफलो के[5] दहाने[6],
फैला हर इक जंजीर का दामन।

बोल, ये थोडा वक्त वहुत है,
जिस्मो-ज़बा की मौत से पहले।
बोल कि सच ज़िन्दा है अब तक,
बोल, जो कुछ कहना है कहले।

---

१ सीधा २ लोहार ३ तेज़ ४. लोहा ५ तालों के ६ मुंह

आख़री ख़त

वो वक़्त मेरी जान वहुत दूर नहीं है
जव दर्द से रुक जायेंगी सव जीस्त की[1] राहें
और हद से गुज़र जायेगा अन्दोहे-निहानी[2]
थक जायेंगी तरसी हुई नाकाम निगाहें
छिन जायेंगे मुझ से मेरे आंसू मेरी आहें
छिन जायेगी मुझसे मेरी वेकार जवानी
शायद मेरी उल्फ़त को वहुत याद करोगी
अपने दिले-मासूम को नाशाद[3] करोगी
आओगी मेरी गोर पे[4] तुम अश्क[5] वहाने
नौखेज़[6] वहारों के हसीं फूल चढाने
शायद मेरी तुरवत को[7] भी ठुकरा के चलोगी
शायद मेरी वेसूद वफ़ाओं पे हंसोगी
इस वज़अ्-ए-करम का[8] भी तुम्हें पास[9] न होगा
लेकिन दिले-नाकाम को एहसास न होगा
अलक़िस्सा[10] मआले-ग़मे-उल्फ़त पे[11] हंसो तुम
या अश्क वहाती रहो, फ़र्याद करो तुम
माज़ी पे[12] नदामत हो तुम्हें या कि मसर्रत
ख़ामोश पड़ा सोएगा वामांदा-ए-उल्फ़त[13]

---

१. जीवन की २. भीतरी दुख ३. दुखित ४. क़ब्र पर ५ आंसू ६. नई ७ क़ब्र को ८ कृपा के ढंग का ९. लिहाज़ १०. संक्षेप में यह कि ११. प्रेम के दुख के परिणाम पर १२. अतीत पर १३. प्रेम के राहों श्रान्त

ऐ दिले-बेताब ठहर !

तीरगी[1] है कि उमडती ही चली आती है,
शब की[2] रग-रग से लहू फूट रहा हो जैसे।
चल रही है कुछ इस अंदाज़ से नब्ज़े - हस्ती[3] ,
दोनो आलम का[4] नशा टूट रहा हो जैसे।
रात का गर्म लहू और भी बह जाने दो,
यही तारीकी[5] तो है गाज़ा-ए-रुख्सारे-सहर[6],
सुबह होने ही को है ऐ दिले - बेताब ठहर !
अभी जंजीर छनकती है पसे-पर्दा - ए - साज़[7] ,
मुतलक-उलहुक्म[8] है शीराज़ाए-असबाब[9] अभी।
सागरे - नाब में[10] आसू भी ढलक जाते हैं,
लगज़िशे-पा मे[11] है पाबदी-ए-आदाब[12] अभी।
अपने दीवानो को दीवाना तो बन लेने दो।
अपने मैखानो को मैखाना तो बन लेने दो॥
जल्द ये सतवते-असबाब[13] भी उठ जायेगी।
ये गिराबारी-ए-आदाब[14] भी उठ जायेगी॥
ख्वाह जंजीर छनकती ही छनकती ही रहे॥

---

१ अन्धकार २ रात की ३ जीवन की नाडी ४ दुनियाओं का ५ अन्धकार ६ सुबह के गालो की लालिमा ७ साज़ के पर्दे के पीछे ८ सर्वोपरि आज्ञा देने वाला ९ कारणो की एकग्रता १० शराब के प्याले मे ११ पाँव की डगमगाहट मे १२ झूठे शिष्टाचार की पाबन्दी १३ कारणो का दबदबा या आतंक १४ (झूठे) शिष्टाचार का असह्य बोझ

मौज़ूए-सुख़न†

गुल हुई जाती है[1] अफ़सुर्दा[2] सुलगती हुई शाम,
धुल के निकलेगी अभी चश्मा-ए-महताब से[3] रात।
और—मुश्ताक़ निगाहों से सुनी जायेगी,
और—उन हाथों से मस[4] होंगे ये तरसे हुए हात॥

उन का आंचल है कि रुख़सार[5] कि पैराहन[6] है,
कुछ तो है जिस से हुई जाती है चिलमन रंगीं।
जाने उस जुल्फ की मौहूम[7] घनी छाओं में,
टिमटिमाता है वो आवेज़ा[8] अभी तक कि नहीं?

आज फिर हुस्ने-दिलारा की[9] वही धज होगी,
वही ख़्वाबीदा सी[10] आंखें, वही काजल की लकीर।
रंगे-रुख़सार पे[11] हल्का सा वो ग़ाज़े का गुबार,
संदली हाथ पे धुंदली सी हिना की[12] तहरीर[13]॥

अपने अफ़कार की[14], अशआर की[15] दुनिया है यही।
जाने-मज़मूं[16] है यही, शाहिदे-मानी[17] है यही॥

---

† काव्य-विषय

१. बुझ रही है   २. उदास   ३. चांद के चश्मे से   ४. स्पर्श
५. कपोल   ६. लिबास   ७ भ्रममूलक   ८. कान का बुंदा
९. रमणीक सौन्दर्य की   १०. स्वप्निल सी   ११. कपोलों के रंग पर
१२. मेहंदी की   १३. चित्रकारी   १४. रचनाओं की   १५. शेरों की
१६. विषय की जान   १७. अर्थों का प्रत्यक्षदर्शी या साक्षी

आज तक सुर्खो-सियाह सदियो के साये के तले,
आदमो-हव्वा की औलाद पे[1] क्या गुज़री है ?
मौत और ज़ीस्त[2] की रोज़ाना सफ-आराई मे[3],
हम पे क्या गुज़रेगी, अजदाद पे[4] क्या गुज़री है ?

इन दमकते हुए शहरो की फरावा[5] मखलूक[6]।
क्यो फकत मरने की हसरत मे जिया करती है ?
ये हसी खेत, फटा पडता है जोबन जिनका,
किस लिए इन मे फकत भूख उगा करती है ?

ये हर एक सिम्त[7] पुरअसरार[8] कडी दीवारें,
जल बुझे जिन मे हज़ारो की जवानी के चिराग़।
ये हर एक गाम पे[9] उन ख्वाबो की मक्तल-गाहे[10],
जिनके परतो से[11] चिरागां[12] हैं हज़ारो के दिमाग़॥

ये भी हैं ऐसे कई और भी मज़मू[13] होगे,
लेकिन उस शोख के आहिस्ता से खुलते हुए होट,
हाय उस जिस्म के कम्बख्त दिलावेज़ खुतूत[14],
आप ही कहिये कही ऐसे भी अफसू[15] होगे ?

अपना मौज़ू-ए-सुखन इन के सिवा और नही।
तबए-शायर का[16] वतन इन के सिवा और नहीं।

---

१ संतान पर २ जीवन ३ सग्राम मे ४ पुरखों पर
५ प्रचुर ६ जनता ७ ओर ८ रहस्यपूर्ण ९ पग पर
१०. वध-स्थान ११ प्रतिबिम्ब ने १२ दीप्तिमान १३ विषय
१४ हृदयाकर्षक रेखायें (बनावट) १५ जादू १६. शायर की प्रकृति

आज की रात

आज की रात साजे-दर्द न छेड़ !

दुख से भरपूर दिन तमाम हुए
और कल की खबर किसे मालूम ?
दोशो-फर्दा की[1] मिट चुकी है हदूद[2]
हो न हो अब सहर किसे मालूम ?

जिन्दगी हेच ! लेकिन आज की रात
एजदियत[3] है मुमकिन आज की रात

आज की रात साजे-दर्द न छेड़ !

अब न दोहरा फसान-हाए-अलम[4]
अपनी किस्मत पे सोगवार[5] न हो
फिक्रे-फ़र्दा[6] उतार दे दिल से
उम्रे-रफ्ता पे[7] अश्कबार न हो[8] ।

अहदे-गम की हिकायतें[9] मत पूछ
हो चुकी सब शिकायतें मत पूछ

आज की रात साजे-दर्द न छेड़ !

१. अतीत और भविष्य की २. सीमायें ३. खुदाई ४. दुख की कहानियां ५. उदास ६. कल की चिन्ता ७. बीती आयु पर ८. आंसू न बहा ९. दुख के दिनों की कहानियां

शाहराह

एक अफसुर्दा[1] शाहराह[2] है दराज़[3] ,
दूर उफक[4] पर नज़र जमाये हुए ।
सर्द मिट्टी पे अपने सीने के,
सुरमगी[5] हुस्न को बिछाये हुए ॥

जिस तरह कोई गम-ज़दा[6] औरत,
अपने वीरा कदे में[7] महवे-ख्याल[8] ।
वस्ले - महबूब के[9] तसव्वुर मे[10],
मू-ब-मू[11] चूर, अजू-अजू[12] निढाल ॥

---

१ उदास २ राजमार्ग ३ फैली हुई ४ क्षितिज पर ५ सुरमे के रंग जैसा ६ शोकातुर ७ वीरान घर मे ८ चिंताओ मे डूबी हुई ९ पिया मिलन के १० कल्पना मे ११ बाल-बाल १२ अंग-अंग

मेरे हमदम मेरे दोस्त !

गर मुझे इस का यक़ीं हो, मेरे हमदम मेरे दोस्त !
गर मुझे इस का यक़ीं हो कि तेरे दिल की थकन
तेरी आंखों की उदासी, तेरे सीने की जलन
मेरी दिल-जोई, मेरे प्यार से मिट जायेगी
गर मेरा हर्फ़-तसल्ली[1] वो दवा हो जिस से
जी उठे फिर तेरा उजड़ा हुआ बेनूर दिमाग़
तेरी पेशानी से धुल जायें ये तज़्लील के[2] दाग़
तेरी बीमार[3] जवानी को शफ़ा हो जाये
गर मुझे इस का यक़ीं हो, मेरे हमदम मेरे दोस्त
मैं तुझे भींच लूं सीने से लगा लूं तुझ को
रोज़ो-शब[4], शामो-सहर[5] मैं तुझे बहलाता रहूं
मैं तुझे गीत सुनाता रहूं हल्के, शीरीं,
आबशारों के[6], बहारों के, चमन-ज़ारों के[7] गीत
आमदे-सुबह के[8], महताब के[9] सय्यारों के[10] गीत
तुझ से मैं हुस्नो-मोहब्बत की हिकायात[11] कहूं

---

१. ढारस का शब्द २. अपमान के ३. रोगी ४. दिन-रात ५. सुबह-शाम ६. झरनों के ७. बागों के ८. सुबह के आगमन के ९. चाँद के १०. नक्षत्रों के ११. कहानियाँ

......तुम्हारे हुस्न के नाम !

सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम !

बिखर गया जो कभी रंगे-पैरहन[1] सरे-बाम[2]
निखर गई है कभी सुबह, दोपहर, कभी शाम
कहीं जो कामते-ज़ेबा पे[3] सज गई है कबा[4]
चमन में सर्वो-सनोबर[5] सँवर गये हैं तमाम
बनी बिसाते-ग़ज़ल[6] जब डबो लिये दिल ने
तुम्हारे साया-ए-रुख़्सारो-लब में[7] सागरो-जाम
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम !

तुम्हारे हात पे[8] है ताबिशे-हिना[9] जब तक
जहां में बाक़ी है दिलदारिये-उरूसे-सुख़न[10]
तुम्हारा हुस्न जवां है तो मेहरबां है फ़लक[11]
तुम्हारा दम है तो दमसाज़[12] है हवा-ए-वतन[13]
अगरचे तंग हैं औक़ात[14], सख़्त हैं आलाम[15]
तुम्हारी याद से शीरीं[16] है तल्ख़ी-ए-अय्याम[17]
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम !

(जेल में)

---

१ लिबास का रंग २ छत पर ३. हृदयाकर्षक क़द (शरीर) पर ४ कुर्ता (लिबास) ५ वृक्षों के नाम ६ ग़ज़ल बन गई ७ कपोलों और होंटों की छाया में ८ हाथ पर ९ मेंहदी की आभा १० कविता रूपी दुल्हन की दिलदारी ११ आकाश १२ मित्र १३ देश की हवा १४ समय १५ दुख १६ मधुर १७ जीवन की कटुता

दो इश्क़

(१)

ताज़ा हैं अभी याद में ऐ साक़ी-ए-गुलफ़ाम[1],
वो अक्से-रुख़े-यार से[2] लहके हुए अय्याम[3]।
वो फूल-सी खिलती हुई दीदार की[4] साअ़त[5],
वो दिल-सा धड़कता हुआ उम्मीद का हंगाम[6]॥

उम्मीद कि लो जागा ग़मे-दिल का नसीबा,
लो शौक़ की[7] तरसी हुई शब हो गई आख़िर।
लो डूब गये दर्द के बेख़्वाब सितारे,
अब चमकेगा बेसब्र निगाहों का मुक़द्दर॥

इस बाम से निकलेगा तेरे हुस्न का ख़ुरशीद[8],
उस कुंज से फूटेगी किरन रंगे-हिना की[9]।
इस दर से बहेगा तेरी रफ़्तार का सीमाब[10],
उस राह पर फूलेगी शफ़क़ तेरी क़बा की[11]॥

---

१. फूल जैसे रंग वाला २. प्रेमिका के मुखड़े के प्रतिबिम्ब में
३. दिन (जीवन) ४. दर्शन की ५. क्षण ६ समय ७ इश्क़ की
८ सूरज ९ मेहंदी के रंग की १०. पारा ११. कुर्ते (लिबास) की

निसार मैं तेरी गलियों पे···

निसार मैं तेरी गलियो पे ऐ वतन कि जहा,
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले।
जो कोई चाहने वाला तवाफ को[1] निकले,
नज़र चुराके चले, जिस्मो-जा बचाके चले।

है अहले-दिल के लिए अब ये नज़्मे-बस्तो-कुशाद[2],
कि संगो-खिश्त[3] मुकय्यद[4] हैं और संग[5] आज़ाद।

बहुत है जुल्म के दस्ते-बहाना-जू के[6] लिये,
जो चन्द अहले - जुनूँ तेरे नाम-लेवा हैं।
बने हैं अहले-हवस[7] मुद्दई भी, मुन्सिफ भी,
किसे वकील करें, किससे मुन्सिफी चाहे ?

मगर गुज़ारने वालो के दिन गुज़रते हैं,
तेरे फिराक में यूँ सुबहो - शाम करते हैं।

बुझा जो रोज़ने-ज़िंदां[8] तो दिल ये समझा है,
कि तेरी मांग सितारो से भर गई होगी।
चमक उठे हैं सलासिल[9] तो हमने जाना है,
कि अब सहर[10] तेरे रुख पर[11] बिखर गई होगी।

---

१ परिक्रमा के लिए २ खोल-बाध की व्यवस्था ३ ईंट पत्थर ४ क़ैद ५ कुत्ते ६ बहाना बनाने वाले के हाथ के ७ लोलुप ८ कारागार का झरोखा ९. बेडियाँ १० सुबह ११ मुखड़े पर

गरज़ तसव्वुरे - शामो - सहर मे[1] जीते हैं,
गिरफ़्ते - साया - ए - दीवारो - दर मे[2] जीते हैं।

युँही हमेशा उलझती रही है ज़ुल्म से खल्क[3] ,
न उनकी रस्म नई है, न अपनी रीति नई।
युँही हमेशा खिलाये हैं हमने आग मे फ़ूल,
न उनकी हार नई है न अपनी जीत नई।

इसी सबब से फ़लक का गिला नही करते,
तेरे फ़िराक मे हम दिल बुरा नही करते।

गर आज तुझसे जुदा है तो कल बहम[4] होगे,
ये रात भर की जुदाई तो कोई बात नही।
गर आज ओज पे[5] है तालए-रकीब[6] तो क्या !
ये चार दिन की खुदाई तो कोई बात नही।

ये तुझसे अहदे - वफ़ा उस्तवार[7] रखते हैं,
इलाजे - गर्दिशे - लैलो - नहार[8] रखते हैं।

(जेल में)

---

१ सुबह और शाम की कल्पना में २. दीवारों और दरवाजों के सायों की पकड़ में ३ जनता ४. इकट्ठे ५. ऊंचाई पर ६ प्रतिद्वन्द्वी का भाग्य ७ प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा को सुदृढ़ ८. रात-दिन के चक्कर का इलाज

जग ठहरी है कोई खेल नही है ऐ दिल !
दुश्मने-जा हैं सभी, सारे के सारे क़ातिल,
ये कड़ी रात भी, ये साये भी, तनहाई भी,
दर्द और जग मे कुछ मेल नही है ऐ दिल !

लाओ सुलगाओ कोई जोशो-गज़ब का[1] अगार[2] !
तैश की[3] आतिशे-जर्रार[4] कही से लाओ,
वो दहकता हुआ गुलज़ार कही से लाओ,
जिसमे गर्मी भी है, हरकत भी, तवानाई[5] भी !

हो न हो अपने कबीले का भी कोई लश्कर,
मुन्तज़िर होगा अधेरे की फसीलो के[6] उधर।

इनको शोलो के रजज़[7] अपना पता तो देंगे,
खैर, हम तक न वो पहुंचे भी, सदा[8] तो देंगे,
दूर कितनी है अभी सुबह, बता तो देंगे !

(जेल मे)

१ उत्तजना और क्रोध का २. अगारा ३ क्रोध की ४ प्रचड अग्नि ५ शक्ति ६ शहरपनाहो के ७ वे शेर जो युद्धक्षेत्र में स्वय पढे जाते हैं ८ आवाज़

कोई आशिक़ किसी महबूबा से

याद की राहगुज़र जिस पे इसी सूरत से
मुद्दतें बीत गई है तुम्हे चलते-चलते
खत्म हो जाये जो दो-चार कदम और चलो
मोड़ पड़ता है जहा दश्ते-फरामोशी का[1]
जिससे आगे न कोई मै हूं न कोई तुम हो
सांस थामे है निगाहे कि न जाने किस दम
तुम पलट आओ, गुज़र जाओ या मुड़कर देखो
गरचे वाकिफ हैं निगाहें कि ये सब धोखा है
गर कही तुमसे हम-आग़ोश[2] हुई फिर से नज़र
फूट निकलेगी वहा और कोई राहगुज़र[3]
फिर उसी तरह जहां होगा मुकाबिल पैहम[4]
साया-ए-ज़ुल्फ का[5] और जुंबिशे-बाज़ू का[6] सफर
दूसरी बात भी झूठी है कि दिल जानता है
यां कोई मोड़, कोई दश्त, कोई घात नहीं
जिसके पर्दे में मेरा माहे-रवां[7] डूब सके
तुमसे चलती रहे ये राह, युही अच्छा है
तुमने मुड़ कर भी न देखा तो कोई बात नहीं।

(जेल में)

---

१. विस्मृति के जंगल का २ आलिंगन-बद्ध ३. मार्ग
४. निरंतर सामना ५. केशों की छाया ६. बाहों के हिलने डोलने का ७ गतिशील चाँद

शीशो का मसीहा[1] कोई नहीं !

मोती हो कि शीशा, जाम[2] कि दर[3]
जो टूट गया सो टूट गया
कब अश्को से[4] जुड सकता है
जो टूट गया, सो छूट गया

तुम नाहक टुकडे चुन-चुन कर
दामन में छुपाये बैठे हो
शीशो का मसीहा कोई नही
क्या आस लगाये बैठे हो

शायद कि इन्ही टुकडो में कही
वो सागरे-दिल[5] है जिसमें कभी
सद नाज़ से[6] उतरा करती थी
सहबाए-गमे-जाना की[7] परी

फिर दुनिया वालो ने तुम से
ये सागर लेकर फोड़ दिया
जो मै थी वहा दी मिट्टी मे
मेहमान का शह-पर[8] तोड दिया

---

१ हज़रत मसीह (बीमारो को अच्छा और मुर्दो को जीवित करने वाला) २ शराब का प्याला ३ दरवाजा ४ आंसुओ से ५ हृदय रुपी शराब का प्याला ६ बडे गर्व से ७ प्रेयसी के ग़म की शराब की ८ सब से बडा और मजबूत पंख

ये रंगी रेज़े[१] हैं शाहिद
उन शोख बलूरी सपनों के
तुम मस्त जवानी में जिन से
खलवत को[२] सजाया करते थे

नादारी[३], दफ़्तर, भूख और गम
इन सपनो से टकराते रहे
बेरहम था चौमुख पथराओ
ये काच के ढांचे क्या करते

या शायद इन ज़र्रों मे कहीं
मोती है तुम्हारी इज़्ज़त का
वो जिस से तुम्हारी इज्ज़ पे भी
शमशाद-क़दों ने[४] रश्क[५] किया

इस माल की धुन मे फिरते थे
ताजिर भी बहुत, रहज़न[६] भी बहुत
है चोर नगर, या मुफलिस की
गर जान बची तो आन गई

ये सागरो-शीशे लालो-गुहर
सालम हों तो कीमत पाते हैं
यूं टुकड़े-टुकड़े हों तो फकत
चुभते हैं, लहू रुलवाते हैं

१. रंगीन टुकड़े २. एकांत या शयनागार को ३. दरिद्रता
४. शमशाद नामक वृक्ष के समान ऊँचे क़द वालों ने ५. ईर्ष्या ६. डाकू

अंजाम[1]

हैं लबरेज़[2] आहो से ठंडी हवाएं,
उदासी में डूबी हुई हैं घटाएं।
मोहब्बत की दुनिया पे शाम आ चुकी है,
सियाह-पोश[3] हैं जिन्दगी की फज़ाए[4]।

मचलती हैं सीने में लाख आरज़ूए[5],
तड़पती हैं आंखो में लाख इल्तजाए[6]।
तगाफुल[7] के आगोश[8] में सो रहे हैं,
तुम्हारे सितम[9] और मेरी वफाए।

मगर फिर भी ऐ मेरे मासूम[10] कातिल[11]!
तुम्हें प्यार करती हैं मेरी दुआए!!

---

१ अन्त, परिणाम २ भरी हुई ३ अन्धकारपूर्ण ४ जीवन का वातावरण ५ अभिलाषाएँ ६ आत्म-निवेदन ७ उदासीनता ८ गोद ९ अत्याचार १० अबोध ११ हत्यारे

हसीना-ए-ख़याल[1] से

मुझे देदे—

रसीले होंट, मासूमाना पेशानी[2], हसी आखे,
कि मैं इक बार फिर रंगीनियों में ग़र्क़ हो जाऊं,
मेरी हस्ती को[3] तेरी इक नज़र आग़ोश[4] में ले ले,
हमेशा के लिए इस दाम[5] में महफ़ूज़[6] हो जाऊं,
ज़िया-ए-हुस्न[7] से ज़ुल्माते-दुनिया[8] में न फिर आऊं।

गुज़श्ता[9] हसरतों[10] के दाग मेरे दिल से धुल जाएं,
मैं आने वाले ग़म की फ़िक्र से आज़ाद हो जाऊं।

मेरे माज़ी व मुस्तक़बिल[11] सरासर महव[12] हो जाएं,
मुझे वो इक नज़र, इक जाविदानी[13] सी नज़र दे दे।

(ब्राउनिंग)

---

१ कल्पना-सुन्दरी २. भोलापन लिए हुए माथा ३. अस्तित्व को ४. गोद ५. फन्दे ६. सुरक्षित ७ सौन्दर्य की आभा ८ संसार के अन्धकार ९ पुराने १० अतृप्त अभिलाषाओं ११ भूत व भविष्य १२ विस्मृत १३. अमर

इन्तज़ार

गुज़र रही हैं शबो-रोज़[1] तुम नहीं आती।
रियाज़े-ज़ीस्त[2] है आज़ुर्दा-ए-बहार[3] अभी,
मेरे खयाल की दुनिया है सोगवार[4] अभी।

जो हसरतें[5] तेरे गम की कफ़ील[6] हैं प्यारी,
अभी तलक मेरी तनहाइयों में बसती हैं।
तवील[7] रातें अभी तक तवील हैं प्यारी,
उदास आंखें अभी इन्तज़ार करती हैं।

बहारे-हुस्न[8] पे पाबन्दी-ए-जफ़ा[9] कब तक?
ये आज़माइशे-सब्रे-गुरेज़-पा[10] कब तक?
कसम तुम्हारी बहुत गम उठा चुका हूँ मैं।
गलत था दावा-ए-सब्रो-शकेब[11], आ जाओ।
करारे-खातिरे-बेताब थक गया हूं मैं॥

---

१ रात-दिन २. जीवन का उद्यान ३ वसन्त-ऋतु से वंचित ४ शोकपूर्ण ५ अतृप्त आकांक्षाएँ ६ ज़मानत ७ लम्बी ८. सौन्दर्य की वसन्त-ऋतु ९ अत्याचारों का बन्धन १०. (संघर्ष से) बचने की इच्छा रखने वाले धैर्य की परीक्षा ११ धैर्य और सहन-शक्ति का दावा

हुस्न और मौत

जो फूल सारे गुलिस्तां में सबसे अच्छा हो,
फरोगे-नूर[1] हो जिससे फ़िज़ाए-रंगी[2] में,
खिज़ां[3] के जोरो-सितम[4] को न जिसने देखा हो,
बहार ने जिसे खूने-जिगर से पाला हो,
वो एक फूल समाता है चश्मे-गुलची[5] में।
हज़ार फूलों से आबाद बागे-हस्ती[6] है,
अजल[7] की आंख फ़कत एक को तरसती है।
कई दिलों की उमीदों का जो सहारा हो।
फ़िज़ा-ए-दहर की आलूदगी[8] से बाला[9] हो।
जहां में आके अभी जिसने कुछ न देखा हो।
न क़हते ऐशो-मुसर्रत[10], न ग़म की अरज़ानी[11],
किनारे-रहमते-हक़[12] में उसे सुलाती है,
सकूते-शब[13] में फ़रिश्तों की मर्सिया-ख्वानी[14]।
तवाफ़[15] करने को सुबह्-ए-बहार आती है,
सबा[16] चढ़ाने को जन्नत के फूल लाती है।

---

१. प्रकाश में बढ़ोतरी २. रंगीन वातावरण ३. पतझड़ ४. अत्याचार और क्रूरता ५. फूल चुनने वाले की दृष्टि में ६ जीवन रूपी उद्यान ७ मृत्यु, यमदूत ८ सृष्टि के वातावरण की [illegible] ९. ऊपर (निर्लिप्त) १०. ऐश्वर्य एवं सुख की कमी ११. दुःखों की [illegible] १२. ईश्वर की कृपा को प्रदान करती है १३. रात्रि की निस्तब्धता १४. शोक-गीत १५. परिक्रमा १६ प्रभात-समीर

मेरे नदीम[1] ...

ख़यालो-शेर[2] की दुनिया में जान थी जिन से,
फिज़ाए-फिक्रो-अमल[3] अरगवान[4] थी जिन से,
वो जिनके नूर[5] से शादाब[6] थे महो-अजुम[7],
जनूने-इश्क की हिम्मत जवान थी जिन से,
वो आरज़ूए[8] कहा सो गई हैं मेरे नदीम ?

वो नासबूर[9] निगाहें, वो मुन्तज़िर राहे,
वो पासे-ज़ब्त[10] से दिल मे दबी हुई आहे,
वो इन्तज़ार की रातें, तवील[11], तीरह्-व-तार[12],
वो नीम-ख्वाब शबिस्ताँ[13], वो मख़मली बाहे,
कहानिया थी, कही खो गई है मेरे नदीम !

मचल रहा है रगे-ज़िन्दगी मे खूने-बहार,
उलझ रहे है पुराने गमो से रूह के तार,
चलो, कि चलके चिरागा[14] करें दियारे-हबीब[15],
हैं इन्तज़ार मे अगली[16] मोहब्बतो के मज़ार[17],
मोहब्बतें जो फना[18] हो गई हैं मेरे नदीम !

---

१ मित्र, साथी २ विचार और काव्य ३ विचार और कर्म का वातावरण ४ लाल (रगीन) ५ ज्योति ६ आप्लावित, परिपूर्ण ७. चांद और तारे ८ आकाक्षाएँ ९ बेचैन, अधीर १० सहन करने का लिहाज ११ लम्बी १२ अन्धकारपूर्ण १३ अर्ध-जाग्रत शयनागार १४ दीप-मालिका १५ प्रिय मित्र के घर १६ पहली, पुरानी १७ प्रेम की समाधियां १८ विनष्ट

मर्गे-सोज़े-मोहब्बत[1]

आओ कि मर्गे-सोज़े-मोहब्बत मनाएं हम,
आओ कि हुस्ने-माह[2] से दिल को जलाएं हम ।
खुश हो फ़िराके-कामतो-रुखसारे-यार[3] मे,
सर्वो-गुलो-समन[4] से नज़र को सताएं हम ।
वीरानी-ए-हयात को[5] वीरानतर[6] करे,
ले नासह[7] ! आज तेरा कहा मान जाएं हम ।
फिर ओट लेके दामने-अब्रे-बहार की[8],
दिल को मनाएं हम कभी आंसू बहाएं हम ।
सुलझाएं बेदिली से ये उलझे हुए सवाल,
वां जाएं या न जाएं, न जाएं कि जाएं हम ।
फिर दिल को पासे-ज़ब्त[9] की तलकीन[10] कर चुकें,
और इम्तहाने-ज़ब्त[11] से फिर जी चुराएं हम ।
आओ कि आज खत्म हुई दास्ताने-इश्क[12],
अब खत्म-आशिकी[13] के फ़साने[14] सुनाएं हम ।

---

१. प्रेम की जलन की मृत्यु (अन्त) २. चन्द्रमा के सौन्दर्य ३. प्रेयसी के कपोलों और लम्बे कद के वियोग में ४. सर्व नामक पेड़ (जिससे लम्बे कद की उपमा दी जाती है) तथा फूलों (जिनसे कपोलों की उपमा दी जाती है) ५. जीवन की वीरानी को ६. और अधिक वीरान ७. उपदेशक ८. बसन्त-ऋतु के बादल में छुपने की ९. मान करने की परिपाटी १०. उपदेश ११. धैर्य की परीक्षा १२. प्रेम की कहानी १३. वह प्रेम जो समाप्त हो चुका है १४. कहानियाँ

तराना

दरबारे-वतन में जब इक दिन सब जाने वाले जाएगे,
कुछ अपनी सज़ा को पहुँचेंगे, कुछ अपनी जज़ा[1] ले जाएगे।

ऐ खाक-नशीनो[2]! उठ बैठो वो वक्त करीब आ पहुँचा है,
जब तख्त[3] गिराए जाएगे, जब ताज उछाले जाएगे।

अब टूट गिरेंगी ज़ंजीरें, अब ज़िन्दानो की[4] खैर नही,
जो दरिया झूम के उट्ठेंगे, तिनको से न टाले जाएगे।

कटते भी चलो बढते भी चलो, बाज़ू भी बहुत हैं सर भी बहुत,
चलते भी चलो कि अब डेरे मज़िल पे ही डाले जाएगे।

ऐ ज़ुल्म के मारो! लब खोलो चुप रहने वालो चुप कब तक,
कुछ हश्र[5] तो इन से उट्ठेगा, कुछ दूर तो नाले[6] जाएगे।

---

१ बदला २ धूल-मिट्टी मे रहने वालो ३ राज्य-सिंहासन
४ कारागारों की ५ प्रलय, विनाश ६ आर्तनाद

ग़ज़लें

दोनो जहान तेरी मोहब्बत में हार के ।
वो जा रहा है कोई शबे-ग़म गुज़ार के ॥

वीरां है मैकदा खुमो-सागर[१] उदास हैं ।
तुम क्या गये कि रूठ गये दिन बहार के ॥

इक फ़ुर्सते-गुनाह[२] मिली, वो भी चार दिन ।
देखे हैं हमने हौसले परवरदिगार के[३] ॥

दुनिया ने तेरी याद से बेगाना कर दिया ।
तुझ से भी दिलफ़रेब[४] हैं ग़म रोज़गार के[५] ॥

भूले से मुस्करा तो दिये थे वो आज 'फ़ैज़' ।
मत पूछ वलवले दिले-नाकर्दाकार के[६] ॥

१. शराब का प्याला और मटकी २. पाप करने का अवकाश ३. भगवान के ४. हृदयाकर्षक ५. सांसारिक ग़म ६. अनुभवहीन दिल के

हम पर तुम्हारी चाह का इल्ज़ाम ही तो है,
दुश्नाम[1] तो नही है ये अक्राम[2] ही तो है।

करते हैं जिसपे तअ्न[3] कोई जुर्म तो नही,
शौके-फज़लो-उल्फते-नाकाम[4] ही तो है।

दिल नाउमीद तो नही नाकाम[5] ही तो है,
लम्बी है गम की शाम मगर शाम ही तो है।

दस्ते-फलक मे[6] गर्दिशे-तकदीर[7] तो नही,
दस्ते-फलक मे गर्दिशे-अय्याम[8] ही तो है।

आखिर तो एक रोज़ करेगी नज़र वफा,
वो यार खुश-खसाल[9] सरे-बाम[10] ही तो है।

भीगी है रात 'फैज़' गज़ल इब्तदा[11] करो,
वक्ते-सरोद[12] दर्द का हगाम[13] ही तो है।

---

१ गाली, (बुराई) २ अनुग्रह ३ व्यंग ४ व्यर्थ की चाह तथा असफल प्रेम ५ असफल ६ आकाश (विधाता) के हाथ मे ७ भाग्य-चक्र ८ रात-दिन का चक्र ९ अच्छे स्वभाव वाला १० छत के सिरे पर ११ प्रारम्भ १२ गाने का समय १३ क्षण (अवसर)

तुम आये हो न शबे-इन्तजार[1] गुजरी है।
तलाश में है सहर[2], बार-बार गुजरी है ॥

जुनू में[3] जितनी भी गुजरी ब-कार[4] गुजरी है।
अगरचे दिल पे खराबी हजार गुजरी है ॥

हुई है हजरते-नासह से[5] गुफ्तगू जिस शब।
वो शब जरूर सरे-कूए-यार[6] गुजरी है ॥

वो बात सारे फसाने में[7] जिसका जिक्र न था।
वो बात उनको बहुत नागवार गुजरी है ॥

न गुल खिले हैं, न उनसे मिले, न मै पी है।
अजीब रंग में अब के बहार गुजरी है ॥

चमन पे गारते-गुलची से[8] जाने क्या गुजरी।
क़फस से[9] आज सबा[10] बेकरार गुजरी है ॥

(जेल में)

० ० ०

१. इन्तजार की रात २. सुबह ३. उन्माद में ४. रात में
५ उपदेशक से ६ प्रेमिका की गली में ७ कहानी में ८ माली की लूट-खसूट ९ पिंजरे से १० प्रभात समीर

इश्क मिन्नत-कशे-करार[1] नहीं ।
हुस्न मजबूरे - इन्तजार नहीं ।।

तेरी रंजिश की इन्तहा मालूम ।
हसरतो का मेरा शुमार[2] नहीं ।।

अपनी नज़रें बखेर दे साकी ।
मैं बअन्दाज़ा - ए - खुमार[3] नहीं ।।

ज़ेरे-लब[4] है अभी तवस्सुमे-दोस्त[5]।
मुन्तशिर[6] जलवा-ए-बहार[7] नहीं ।।

अपनी तकमील[8] कर रहा हू मैं ।
वर्ना तुझसे तो मुझको प्यार नहीं ।।

चारा-ए - इन्तजार[9] कौन करे ।
तेरी नफरत भी उस्तवार[10] नहीं ।।

'फैज़' ज़िन्दा रहें वो हैं तो सही ।
क्या हुआ गर वफा-शुआर [11] नहीं ।।

---

१ चैन का आभारी २ गणना ३ नशे के अनुमान के अनुसार ४ होंटों मे ५ मित्र या प्रेमिका की मुस्कान ६ अस्त-व्यस्त ७ बहार का जलवा ८ पूर्ति ९ इन्तजार का इलाज १० स्थायी ११. वफ़ादार

रंग पैराहन का[1], ख़ुशबू ज़ुल्फ़ लहराने का नाम
मौसमे-गुल[2] है तुम्हारे बाम पर[3] आने का नाम ॥

दोस्तो, उस चश्मो-लब की[4] कुछ कहो जिनके बग़ैर।
गुलिस्ताँ की बात रंगीं[5] है, न मैख़ाने का नाम ॥

फिर नज़र में फूल महके, दिल में फिर शम्में जलीं।
फिर तसव्वुर ने[6] लिया उस बज़्म में जाने का नाम ॥

दिलबरी ठहरा ज़बाने-ख़ल्क़[7] खुलवाने का नाम।
अब नहीं लेते परी-रू[8] ज़ुल्फ़ बिखराने का नाम ॥

अब किसी लैला को भी इक़रारे-महबूबी[9] नहीं।
इन दिनों बदनाम है हर एक दीवाने का नाम ॥

मोहतसिब की[10] ख़ैर, ऊँचा है उसी के फ़ैज़[11] से।
रिंद का, साक़ी का, मै का, ख़ुम का[12], पैमाने का नाम ॥

हम से कहते हैं चमन वाले, ग़रीबाने-चमन[13] !
तुम कोई अच्छा सा रख लो अपने वीराने का नाम ॥

'फ़ैज़' उनको है तक़ाज़ा-ए-वफ़ा[14] हम से जिन्हें।
आशना के[15] नाम से प्यारा है बेगाने का नाम ॥

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. लिबास का २. बसन्त ऋतु ३. छत पर ४. आँखों और होंटों की ५. रंगीन ६. कल्पना ने ७. दुनिया की ज़बान ८. परियों जैसे मुखड़े वाले ९. प्रेमिका होने का इक़रार १०. रखवाले की ११. कृपा से १२. शराब के मटके का १३ प्रवासी १४ वफ़ा का तक़ाज़ा १५. मित्र के

दिल मे अब यू तेरे भूले हुए गम आते हैं।
जैसे बिछडे हुए काबे मे सनम[1] आते हैं॥

एक एक करके हुए जाते हैं तारे रोशन।
मेरी मजिल की तरफ तेरे कदम आते हैं॥

रक्से-मै[2] तेज़ करो, साज़ की लै तेज़ करो।
सूए-मैखाना[3] सफीराने-सफर[4] आते है॥

कुछ हमी को नही अहसान उठाने का दिमाग।
वो तो जब आते हैं, मायल-ब-करम[5] आते हैं॥

और कुछ देर न गुज़रे शबे-फुर्कत[6] से कहो।
दिल भी कम दुखता है वो याद भी कम आते हैं॥

(जेल में)

१ मूर्तियां २ शराब का नृत्य (दौर) ३ मधुशाला की ओर ४ मुसाफिर ५ कृपा करने पर उतारू ६ वियोग की रात

अज्ज़े-अहले-सितम की[1] बात करो।
 इश्क के दम-क़दम की बात करो॥

बज़्मे-अहले-तरब को[2] शर्माओ।
 बज़्मे-असहाबे-ग़म की[3] बात करो॥

बामे-सरवत के[4] खुशनसीबों से।
 अज़्मते-चश्मे-नम की[5] बात करो॥

है वही बात यूं भी और यूं भी।
 तुम सितम या करम की[6] बात करो॥

ख़ैर हैं अहले-दैर[7] जैसे हैं।
 आप अहले-हरम[8] की बात करो॥

हिज्र की शब तो कट ही जायेगी।
 रोज़े-वस्ले-सनम की[9] बात करो॥

जान जाएंगे जानने वाले।
 'फ़ैज़' फ़रहादो-जम की[10] बात करो॥

(जेल में)

१. अत्याचारियों की गिड़गिड़ाहट २. प्रमोद मनाने वालों की सभा को
३. ग़म जिसकी नियति है उनकी सभा की ४. समृद्धि के शिखर पर के
५. सजल नैनों की महानता की ६. दया की ७. मन्दिर वाले
८. काबे (की चारदीवारी) वालों की ९. प्रेमिका से मिलन के दिन की
१० फ़रहाद और जमशेद (ईरान का एक प्रसिद्ध बादशाह) की

शैख़ साहब से रस्मो-राह न की ।
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की ॥

तुझ को देखा तो सेर-चश्म हुए[1] ।
तुझ को चाहा तो और चाह न की ॥

तेरे दस्ते-सितम का[2] अज्ज़[3] नही ।
दिल ही काफिर था जिसने आह न की ॥

थे शबे-हिज्र[4] काम और बहुत ।
हमने फिक्रे-दिले-तबाह न की ॥

कौन कातिल बचा है शहर मे 'फ़ैज़' ।
जिससे यारो ने रस्मो-राह न की !

(जेल में)

१ आखो की सारी भूख मिट गई २ अत्याचारी हाथ का
३ नम्रता या कमी ४ वियोग की रात को

शामे-फ़िराक़[1] अब न पूछ, आई और आके टल गई।
दिल था कि फिर बहल गया, जां थी कि फिर सम्भल गई॥

बज़्मे-ख़याल में[2] तेरे हुस्न की शम्मअ़ जल गई।
दर्द का चांद बुझ गया, हिज्र की रात ढल गई॥

जब तुझे याद कर लिया, सुबह महक-महक उठी।
जब तेरा ग़म जगा लिया, रात मचल-मचल गई॥

दिल से तो हर मुआ़मला करके चले थे साफ़ हम।
कहने में उनके सामने बात बदल-बदल गई॥

आख़िरे-शब के[3] हम-सफ़र 'फ़ैज़' न जाने क्या हुए?
रह गई किस जगह सबा[4], सुबह किधर निकल गई?

(जेल में)

° ° °

---

१. वियोग की शाम २. [illegible]नाओं की सभा में ३. रात के अन्त में ४. प्रातः-समीर

अब वही हर्फ़े-जुनू[1] सब की ज़बाँ ठहरी है।
जो भी चल निकली है, वो बात कहा ठहरी है॥

आज तक शैख़ के अकराम मे[2] जो शै थी हराम।
अब वही दुश्मने-दी[3] राहते-जा[4] ठहरी है॥

है खबर गर्म कि फिरता है गुरेज़ा[5] नासेह[6]।
गुफ्तगू आज सरे-कूए-बुता[7] ठहरी है॥

वस्ल की शब थी तो किस दर्जा सुबक[8] गुज़री थी।
हिज्र की शब है तो क्या सख्त गिरा[9] ठहरी है॥

इक दफा बिखरी तो हाथ आई है कब मौजे-शमीम[10]।
दिल से निकली है तो क्या लब पे फुगा[11] ठहरी है॥

दस्ते-सय्याद[12] भी आजिज़[13] है, कफे-गुलची[14] भी।
बूए-गुल[15] ठहरी, न बुलबुल की ज़बा ठहरी है॥

आते आते यु ही दम भर को रुकी होगी बहार।
जाते जाते यु ही पल भर को खिज़ा ठहरी है॥

हमने जो तर्ज़े-फुगा[16] की है कफस में[17] ईजाद।
'फैज़' गुलशन में वही तर्ज़े-बया[18] ठहरी है॥

(जेल में)

---

१ उन्माद की बात (भाषा) २ पारितोषिक ३ धर्म की शत्रु ४ जीवन का आनन्द ५ विरक्त ६ उपदेशक ७ प्रेमिका की गली मे ८ हल्की, शीघ्र ९ भारी, असह्य १० सुगंधि की लहर ११ आह १२ शिकारी का हाथ १३ असमर्थ १४ माली का पजा १५ फूल की सुगध १६ आर्त्तनाद का ढग १७ पिंजरे मे १८ बात का ढग

राज़े - उल्फ़त छुपा के देख लिया।
दिल बहुत कुछ जला के देख लिया॥

और क्या देखने को बाकी है।
आप से दिल लगा के देख लिया॥

आस उस दर से टूटती ही नहीं।
जाके देखा, न जाके देख लिया॥

वो मेरे होके भी मेरे न हुए।
उनको अपना बना के देख लिया॥

आज उनकी नज़र में कुछ हमने।
सब की नज़रें बचा के देख लिया॥

'फ़ैज़' तकमीले-ग़म[1] भी हो न सकी।
इश्क़ को आज़मा के देख लिया॥

० ० ०

१. ग़म की पूर्ति

गुलो में रग भरे वादे-नौबहार[1] चले ।
चले भी ग्राम्रो कि गुलशन का कारोबार चले ॥

कफस[2] उदास है यारो सबा से[3] कुछ तो कहो ।
कहीं तो वहरे-खुदा[4] ग्राज ज़िक्रे-यार चले ॥

वडा हैं दर्द का रिश्ता, ये दिल गरीब सही ।
तुम्हारे नाम पे ग्राएगे गमगुसार[5] चले ॥

जो हम पे गुज़री सो गुज़री मगर शबे-हिज्रां ।
हमारे ग्रश्क तेरी ग्राकबत[7] सवार चले ॥

हुज़ूरे-यार[8] हुई दफ्तरे-जुनू की[9] तलब ।
गिरह में लेके गिरेबा का तार-तार चले ॥

मुकाम 'फैज़' कोई राह में जचा ही नही ।
जो कूए-यार से[10] निकले तो सूए-दार[11] चले ॥

(जेल में)

---

५ नव-वसन्त की हवा २ पिंजरा ३ प्रभात-समीर ४ भगवान के लिए ५ सहानुभूति-कर्ता ६ वियोग की रात को ७ परलोक ८ यार की सेवा मे ९ इश्क (उन्माद) के वृत्तात १० यार की गली से ११ फासी के तख्ते की ग्रोर

हिम्मते-इल्तिजा[1] नहीं बाकी ।
जब्त का हौसला नहीं बाकी ॥
इक तेरी दीद[2] छिन गई मुझ से ।
वर्ना दुनिया में क्या नहीं बाकी ?
अपनी मश्के-सितम से[3] हाथ न खैंच ।
मैं नहीं या वफ़ा नहीं बाकी ॥
तेरी चश्मे-अलम-नवाज़[4] की ख़ैर ।
दिल में कोई गिला नहीं बाकी ॥
हो चुका ख़त्म अहदे-हिज्रो-विसाल[5]
ज़िन्दगी में मज़ा नहीं बाकी ॥

० ० ०

१. प्रार्थना की शक्ति २. दर्शन ३. अत्याचार के अभ्यास से
४. दुःख पर दया रखने वाली आँख ५. विरह तथा मिलन का ज़माना

कब याद में तेरा साथ नही, कब हाथ मे तेरा हाथ नहीं ।
सद[1] शुक्र कि अपनी रातो मे अब हिज्र की कोई रात नहीं ॥

मुश्किल हैं अगर हालात वहा, दिल बेच आयें जा दे आयें ।
दिल वालो कूचा-ए-जाना मे[2] क्या ऐसे भी हालात नही ॥

जिस धज से कोई मकतल में[3] गया, वो शान सलामत रहती है ।
ये जान तो आनी-जानी है, इस जा की तो कोई बात नही ॥

मैदाने-वफा[4] दरबार नही, या नामो-नसब की[5] पूछ कहा ?
आशिक तो किसी का नाम नहीं, कुछ इश्क किसी की ज़ात नहीं ॥

गर बाज़ी इश्क की बाज़ी है, जो चाहो लगा दो डर कैसा ?
गर जीत गये तो क्या कहना, हारे भी तो बाज़ी मात नही ॥

(जेल में)

---

१ सौ २ प्रेमिका की गली मे ३. वधस्थल ४ वफा का क्षेत्र
५ नाम तथा कुल की

चश्मे-मैगूं[1] ज़रा इधर कर दे,
दस्ते-क़ुद्रत को[2] बेअसर[3] कर दे।

तेज़ है आज दर्दे-दिल साक़ी,
तल्ख़ी-ए-मै[4] को तेज़तर[5] कर दे।

जोशे-वहशत[6] है तिश्ना-काम[7] अभी,
चाक दामन को ताज़गर[8] कर दे।

मेरी क़िस्मत से खेलने वाले,
मुझको क़िस्मत से बेख़बर कर दे।

लुट रही है मेरी मताअ्-ए-नियाज़[9],
काश! वो इस तरफ़ नज़र कर दे।

'फ़ैज़' तकमीले-आरज़ू[10] मालूम?
हो सके तो यूंही बसर कर दे।

---

१. गगन के रंग जैसे रंग वाली आँख २. प्रकृति के हाथ को ३. निष्प्रभाव ४. शराब की कड़वाहट ५. और अधिक तेज़ ६. उन्माद का जोश ७. अतृप्त ८. नवीन-नवीनतर ९. भक्ति-रूपी पूंजी १० अभिलाषा पूर्ण होने का परिणाम

रह-ए-ख़िज़ा[1] मे तलाशे-बहार करते रहे,
शबे-सियह[2] से तलबे-हुस्ने-यार[3] करते रहे।

खयाले-यार कभी ज़िक्रे-यार करते रहे,
इसी मताश्र[4] पे हम रोज़गार करते रहे।

नही शिकायते - हिज्रा[5] कि इस वसीले से[6],
हम उनसे रिश्ता-ए-दिल उस्तवार[7] करते रहे।

वो दिन कि कोई भी जब वजह-ए-इन्तज़ार न थी,
हम उनमें तेरा सिवा[8] इन्तज़ार करते रहे।

हम अपने राज़ पे नाज़ा थे, शर्मसार न थे,
हर-एक से सुखने-राज़दार[9] करते रहे।

उन्ही के फ़ैज़[10] से बाज़ारे-अक्ल रोशन है,
जो गाह-गाह[11] जनूं[12] अख्तियार करते रहे।

---

१ पतझड के मार्ग मे २ काली, अँधियारी रात ३ यार का सौन्दर्य माँगते रहे ४ सरमाया ५ वियोग की मुझे शिकायत नही है ६ साधन मे ७ दृढ ८ और अधिक ९ गुप्त भेद बतलाते रहे १० कृपा ११ कभी-कभी १२ पागलपन

[नज़रे-ग़ालिब][1]

किसी गुमाँ[2] पे तवक़्क़ो[3] ज़ियादा रखते हैं,
फिर आज कू-ए-बुताँ का[4] इरादा रखते हैं।

बहार आएगी जब आएगी, ये शर्त नहीं,
कि तिश्ना-काम[5] रहें गर्चे बादा[6] रखते हैं।

तेरी नज़र का गिला क्या ? जो है गिला दिल को
तो हम से है कि तमन्ना[7] ज़ियादा रखते हैं।

ग़मे-जहाँ[8] हो, ग़मे-यार हो[9], कि तीरे-सितम[10],
जो आए-आए, कि हम दिल कुशादा[11] रखते हैं।

जवाब वाइज़े-चाबुक-ज़बाँ[12] में 'फ़ैज़' हमें,
यही बहुत है जो दो हर्फ़े-सादा रखते हैं।

१ यह ग़ज़ल महाकवि 'ग़ालिब' की एक ग़ज़ल के ढंग पर कही गई है, इसलिए 'फ़ैज़' ने इसे ग़ालिब को 'भेंट' किया है। २. गुमान ३. भरोसा ४. प्रेयसी की गली में जाने का ५. तृषित ६. शराब ७ अभिलाषा ८. सांसारिक चिन्ताएँ ९ प्रेयसी-सम्बन्धी चिन्ता १० अत्याचार का तीर ११ खुला हुआ, विशाल १२ तेज़ (कड़वा) बोलने वाला उपदेशक

[नज़रे-सौदा][1]

फ़िक्रे-दिलदारिये-गुलज़ार[2] करूं या न करूं ?
ज़िक्रे-मुर्गाने-गिरफ्तार[3] करूं या न करूं ?

क़िस्सा-ए-साज़िशे-अग़यार[4] कहूँ या न कहूं ?
शिकवा-ए-यारे तरहदार[5] करूं या न करूं ?

जाने क्या वज़अ[6] है अब रस्मे-वफ़ा[7] की ऐ दिल !
वज़अ-ए-देरीना पे[8] इसरार[9] करूं या न करूं ?

यूं बहार आई है इमसाल[10] कि गुलशन में सबा[11],
पूछती है गुज़र[12] इस बार करूं या न करूं ?

गोया[13] इस सोच मे है दिल में लहू भरके गुलाब,
दामनो-जेब को गुलनार[14] करूं या न करूं ?

है फ़कत मुर्गे-ग़ज़ल-ख़्वा[15] कि जिसे फ़िक्र नही,
मोअ़्तदिल[16] गर्मी-ए-गुफ्तार[17] करूं या न करूं ।

---

१ यह गज़ल उर्दू के विख्यात प्राचीन कवि 'सौदा' की एक ग़ज़ल के ढग पर लिखी गई है, इसलिए 'फ़ैज़' ने इसे 'सौदा' को भेंट किया है। २ देश-रूपी उद्यान की देख-भाल की चिन्ता ३ बन्दी पक्षियो की चर्चा ४ शत्रुओं के षड्यन्त्र की कहानी ५ रगीले यार की शिकायत ६ रीति ७ प्रेम निभाने की परिपाटी ८. प्राचीन प्रणाली ९ हठ १० इस साल ११ प्रात-समीर १२ प्रवेश १३ मानो १४ पुष्पित, रगीन १५ गाने वाला पक्षी १६ हल्की, नरम, सह्य १७ बात की गर्मी को

कुछ चुने हुए शेर

अदा-ए-हुस्न की[1] मासूमियत को कम कर दे,
गुनाहगार नज़र को हिजाब[2] आता है।

° ° °

वस्के-हिरमानो-यास[3] रहता है,
दिल है अक्सर उदास रहता है।
तुम तो ग़म देके भूल जाते हो,
मुझको अहसां का पास[4] रहता है॥

° ° °

न जाने किस लिए उम्मीदवार बैठा हूँ।
इक ऐसी राह पे जो तेरी रहगुज़र[5] भी नहीं॥

° ° °

१ सुन्दरता की सरलता को २ लज्जा ३ निराशाओं के सम्बन्ध
४ लिहाज ५ गुज़रने का मार्ग

सारी दुनिया से दूर हो जाये,
जो ज़रा तेरे पास हो बैठे।
न गई तेरी बेरुखी न गई,
हम तेरी आरज़ू भी खो बैठे।

◇ ◇ ◇

दिल रहीने-ग़मे-जहाँ[1] है आज,
हर नफ़स[2] तिश्ना-ए-फ़ुग़ां[3] है आज।
सख़्त वीरां है महफ़िले-हस्ती[4],
ऐ ग़मे-दोस्त[5]! तू कहां है आज?

◇ ◇ ◇

न पूछ जब से तेरा इन्तज़ार कितना है?
कि जिन दिनों से मुझे तेरा इन्तजार नहीं।
तेरा ही अक्स है उन अजनबी बहारों में,
जो तेरे लब, तेरे बाज़ू, तेरा किनार[6] नहीं।

◇ ◇ ◇

---

१ सासारिक ग़मो के यहाँ गिरवीं २ श्वास ३ आह का तृषित ४ जीवन-सभा ५ मित्र (प्रेमिका) का ग़म, ६. गोद

तेरा जमाल[1] निगाहों में लेके उट्ठा हूँ,
निखर गई है फिज़ा[2] तेरे पैरहन की सी[3]।
नसीम[4] तेरे शबिस्तां से[5] होके आई है,
मेरी सहर में[6] महक है तेरे बदन की सी।

◇ ◇ ◇

कर रहा था ग़मे-जहां का[7] हिसाब,
आज तुम याद बेहिसाब आये।
न गई तेरे ग़म की सरदारी,
दिल में यूं रोज इंकिलाब आये।

◇ ◇ ◇

फ़िक्रे-सूदो-ज़ियां[8] तो छूटेगी,
मिन्नते-ईनो-आं[9] तो छूटेगी।
ख़ैर, दोज़ख़ में मैं मिले न मिले,
शैख़ साहब से जां तो छूटेगी।

◇ ◇ ◇

१. सौन्दर्य २. वातावरण ३. लिबास की सी ४. मृदु समीर ५. [illegible] ६. सुबह में ७. सांसारिक दुखों का ८. लाभ और हानि की चिन्ता ९. [illegible] का गुनाहगार

शैख़ से बेहिरास[1] रहते हैं,
हमने तौबा अभी नही की है।
ज़िक्रे-दोज़ख[2], बयाने-हूरो-क़ुसूर[3],
बात गोया यही कही की है।

◇ ◇ ◇

जगह जगह पे थे नासेह तो कूबकू[4] दिलबर।
इन्हे पसद, उन्हें नापसद क्या करते?

◇ ◇ ◇

मौत अपनी, न अमल अपना, न जीना अपना,
खो गया शोरिशे-गेती मे[5] क़रीना[6] अपना।
नाखुदा[7] दूर, हवा तेज़, करी[7] कामे-नहग[8],
वक़्त है फेंक दे लहरो में सफीना[9] अपना।

◇ ◇ ◇

१ निडर २ दोज़ख की चर्चा ३. हूरो और महलो की चर्चा ४ गली-गली मे ५. ससार के हगामो मे ६. सलीका ७. माझी ७ निकट ८. मगर का मुंह ९ नाव

शम्मे-नज़र[1], ख़याल के अंजुम[2], जिगर के दाग़,
जितने चिराग़ हैं तेरी महफ़िल से आये हैं।
उठ कर तो आ गये हैं तेरी बज़्म से मगर,
कुछ दिल ही जानता है कि किस दिल से आये हैं।

० ० ०

न आज लुत्फ़[3] कर इतना कि कल गुज़र न सके,
वो रात जो कि तेरे गेसुओं की[4] रात नहीं।
ये आरज़ू भी बड़ी चीज़ है मगर हमदम,
विसाले-यार[5] फ़क़त आरज़ू की बात नहीं।

० ० ०

बात बस से निकल चली है,
दिल की हालत सँभल चली है।
अब जुनूँ[6] हद से बढ़ चला है,
अब तबीयत बहल चली है।

० ० ०

---

१ नज़र की शम्में २ सितारे ३. कृपा प्रेम ४ केशों की
५. प्रेमिका का मिलन ६. उन्माद

सीखी यही मेरे दिले-काफिर ने बन्दगी ।
रब्बे-करीम[1] है तो तेरी रहगुज़र मे है ।।

माज़ी में जो मज़ा मेरी शामो-सहर में था ।
अब वो फक़त तसव्वुरे-शामो-सहर में[2] है ।।

क्या जाने किसको किससे है अब दाद की तलब ।
वो गम जो मेरे दिल मे है तेरी नज़र मे है ।।

◇ ◇ ◇

फिर हरीफे-बहार[3] हो बैठे ।
जाने किस किसको आज रो बैठे ।।

थी, मगर इतनी रायगाँ[4] न थी ।
आज कुछ ज़िन्दगी से खो बैठे ।।

सारी दुनिया से दूर हो जाये ।
जो ज़रा तेरे पास हो बैठे ।।

◇ ◇ ◇

रात यू दिल मे तेरी खोई हुई याद आई,
जैसे वीराने मे चुपके-से बहार आ जाये ।
जैसे सहराओ मे[5] हौले से चले बादे-नसीम[6] ,
जैसे बीमार को बेवजह करार आजाये ।

◇ ◇ ◇

---

१ कृपालु भगवान २ शाम और सुबह की कल्पना मे ३ वसत के शत्रु ४ व्यर्थ ५ मरुस्थलो मे ६ मृदु समीर

मताअ़-ए-लौहो-कलम[1] छिन गई तो क्या गम है ?
कि ख़ूने-दिल[2] में डुबो ली हैं उंगलियां मैंने ।
ज़ुबां पे मोहर लगी है तो क्या, कि रख दी है,
हर एक हल्क़ा-ए-ज़ंजीर[3] में ज़ुबां मैंने ॥

० ० ०

सुबह फूटी तो आस्मां पे तेरे,
रंगे-रुख़्सार की[4] फुहार गिरी ।
रात छाई तो रू-ए-आलम[5] पर,
तेरी ज़ुल्फ़ों की आबशार[6] गिरी ।

---

१. कलम और दवात की पूंजी २. [illegible] ३. ज़ंजीर की प्रत्येक कड़ी में ४. गालों के रंग की ५. जगत के मुख पर ६. निरंतर

मताअ़-ए-लौहो-क़लम[1] छिन गई तो क्या ग़म है ?
कि ख़ूने-दिल[2] मे डबो ली हैं उंगलिया मैंने ।
ज़ुबा पे मोहर लगी है तो क्या, कि रख दी है,
हर एक हल्क़ा-ए-ज़ंजीर[3] में ज़ुबा मैंने ॥

◇ ◇ ◇

सुबह फूटी तो आसमां पे तेरे,
रंगे-रुख़सार की[4] फुहार गिरी ।
रात छाई तो रू-ए-आलम[5] पर,
तेरी ज़ुल्फ़ों की आबशार[6] गिरी !